

अलङ्कारसर्वस्वम् भ्रान्तिमान् अलङ्कार

॥ सादृश्याद्वस्त्वन्तरप्रतीतिभ्रान्तिमान् ॥

असम्यग्ज्ञानत्वसाधर्म्यात्संदेहानन्तरमस्य लक्षणम्। भ्रान्तिश्चित्तधर्मः। स विद्यते यस्मिन्भणितिप्रकारे स भ्रान्तिमान्। सादृश्यप्रयुक्ता च भ्रान्तिरस्य विषयः। यथा-

ओष्ठे बिम्बफलाशयालमलकेषूत्पाकजम्बूधिया

कर्णालंकृतिभाजि दाडिमफलभ्रान्त्या च शोणे मणौ।

निष्पत्त्या सकृदुत्पलच्छददृशामात्तक्लमानां मरौ

राजन्तूर्जरराजपञ्जरशुकैः सद्यस्तृषा मूर्च्छितम् ॥’

गाढमर्मप्रहारादिना तु भ्रान्तिर्नास्यालङ्कारस्य विषयः। यथा-

दामोदरकराघातचूर्णिताशेषवक्षसा।

दृष्टं चाणूरमल्लेन शतचन्द्र नभस्तलम्॥’

सादृश्यहेतुकापि भ्रान्तिर्विच्छित्यर्थं कविप्रतिभोत्थापितैव गृह्यते। यथोदाहृतं न स्वरसोत्थापिता शुक्तिकारजतवत्। एवं स्थाणुर्वा स्यात्पुरुषो वा स्यादिति संशयेऽपि बोद्धव्यम्।

- भ्रान्तिमान् अलङ्कार का पृष्ठभूमि -

प्राचीन आलंकारिकों में भामह, उद्भट तथा वामन ने इसका उल्लेख नहीं किया है। दंडी को मोहोपमा में भ्रान्तिमान अलंकार का अंतर्भाव विवक्षित है। रुद्रट ने इसका नामतः उल्लेख तथा निरूपण किया है। भोज ने इसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। बाद के प्रायः सभी आलंकारिक इसे मानते हैं। कुछ आलंकारिक जैसे भोज, अप्पयदीक्षित भ्रान्तिमान् के स्थान पर भ्रान्ति नाम ही अधिक पसंद करते हैं। आचार्य रुय्यक ने भ्रान्तिमान शब्द का निर्वचन देते हुए कहा है कि भ्रान्ति रूप चित्तधर्म इस अलंकार में रहता है। अतः भ्रान्तिमान् कहना उचित होगा। यथा-

भ्रान्तिश्चित्तधर्मः। स विद्यते यस्मिन्भणितिप्रकारे स भ्रान्तिमान्।

यह भ्रान्ति प्रकृत और अप्रकृत वस्तुओं में सादृश्य को देखकर होनी चाहिए। काम, शोक, भय, उन्माद आदि से पैदा होने वाली भ्रान्ति को इस अलंकार का बीज नहीं माना जा सकता। इसलिए कहा गया है -

सादृश्यप्रयुक्ता च भ्रान्तिरस्य विषयः ॥

शुक्तिका में रजत की भ्रान्ति भी इन दोनों में विद्यमान समान तत्व के आधार पर होती है पर यह भ्रान्ति वस्तु के स्वभाव से जन्य है, कवि प्रतिभा की सृष्टि नहीं है। अतः उसे भी भ्रान्तिमान अलंकार मानना संगत नहीं है।

पहले ही बोल दिया गया है कि काम, शोक, भय, उन्माद आदि से पैदा होने वाली भ्रान्ति को इस अलंकार का बीज नहीं माना जा सकता। अतः “दामोदरकराघातचूर्णिताशेषवक्षसा। दृष्टं चाणूरमल्लेन शतचन्द्र नभस्तलम्॥” यह उदाहरण भ्रान्तिमान् अलङ्कार का स्थल नहीं है।

- डॉ. अशोककुमारशतपथी